

كيف تطهر صيامك من النقص

والثغر (صرقة الفطر)

अपने रोजे की कमी व दोष को

कैसे दूर करें (जाकतुल फित्र)

हिंदी      باللغة الهندية

الشيخ الدكتور هيثم بن محمد جميل سرحان

हिंदी अनुवाद: साबिर हुसैन पुत्र मुहम्मद मुजीबुर रहमान

अपने रोज़े की कमी व कोताही से कैसे पाक व पवित्र करें! ?

भिक्षुओं एवं निर्धनों के मन को कैसे प्रफुल्लित किया जाये ताकि ईद के दिन वो भी वैसे ही खुशी मनाएं जैसे आप मनाते हैं ! ?

इस हदीस में सोच-विचार करें।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़कात -ए- फ़ित्र को फ़र्ज व अनिवार्य करार दिया है, रोज़ेदार को बेहूदगी एवं अश्लीलता से पाक करने के लिए तथा ग़रीबों के भोजन के लिए।

सदक्रा -ए- फ़ित्र प्रत्येक मुसलमान पर वाजिब है, अपनी ओर से तथा जिस पर खर्च करना उस की जिम्मेवारी है उसकी ओर से, जैसे पत्नि एवं संतान।

यदि उसके पास उस दिन अपने भोजन और अपने परिवार के भोजन से अधिक हो।

इसके लिए किसी निर्धारित धनराशि का स्वामी होना शर्त नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति की ओर से एक साअ अनाज एवं फल जिसका सेवन लोग करते हैं, निकालना वाजिब है।

जैसे खजूर, चावल और दाल।

इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खजूर अथवा जौ में से एक साअ ज़कात - ए- फ़ित्र फ़र्ज करार दिया है, प्रत्येक दास एवं स्वतंत्र, महिला तथा पुरुष, बड़े एवं छोटे मुसलमानों पर।

तथा इसे ईद की नमाज़ के लिए जाने के पूर्व निकालने का आदेश दिया है, और यह रमज़ान के आखिरी दिन का सूर्य अस्त होने पर वाजिब होता है।

अफ़ज़ल एवं उत्तम यह है कि इसे ईद की नमाज़ के लिए जाने से पहले निकाले।

ईद से एक दिन अथवा दो दिन पहले निकालने में भी कोई हर्ज नहीं है।

अर्थात् अठ्ठाइसवें रमज़ान की रात से, क्योंकि महीना कभी २९ दिन का होता है और कभी ३० दिन का।

इसको निकालने में ईद की नमाज़ के बाद तक देरी करना जायज नहीं है।

जो इसे ईद के दिन नहीं निकालता है वह गुनाहगार होगा, सिवाय इसके कि किसी के साथ कोई विवशता हो।

तथा इस की क़ज़ा अर्थात् भरपाई वाजिब है, अतः इसे स्वेच्छा व प्रसन्न मन से तथा स़वाब की नियत से निकालने में शीघ्रता करें।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

يا أيها الذين آمنوا أنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلة ولا

شفاعة والكافرون هم الظالمون